0 चतुर्थ अध्याय 0

" भगवतीचरण वर्मा के "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास में

प्रतिबिंबित समाज की विशेषताएँ। "

"भूले - बिसरे चित्र" उपन्यास में प्रतिबिंबित समाज की विशेषताएँ :

"भूले बिसरे चित्र" भगवतीचरण वर्माजीका एक बृहत सामाजिक उपन्यास हैं। इस उपन्यास में भारतीय जीवन का विविधमुखी चित्रण मिलता हैं। वर्माजीने इस उपन्यास में सं. १८८५ ई. से सं. १९३० ई. तक के युग-परिवर्तन का सही चित्रण किया हैं। यह उपन्यास पाँच खंडों में विभाजित हैं, जिसमें एक ही संयुक्त परिवार का युगानुरूप बदलते हुए स्थितियों का चित्रण मिलता हैं।

भगवतीचरण वर्माजीकृत "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास में विविधमुखी समाज प्रतिबिंबित है जिसमें उच्चवर्ग से लेकर निम्नवर्ग तक के समाज का अंतर्मुखी तथा बहिर्मुखी चित्रण मिलता है। यह उपन्यास स्वाधीनतापूर्व कालखंड का होने के कारण इसमें अफसरवर्ग, अँग्रेजी शासक वर्ग, ठाकुर-जमींदार वर्ग, आदि उच्च स्तर के पात्र आते हैं, जो अपनी-अपनी विशेषताएँ लेकर प्रकट होते हैं। वर्माजीने इन भूले-बिसरे चित्रों के माध्यम से भारतीय सामाजिक जीवन का विविधमुखी चित्रण प्रस्तुत किया हैं।

अत: इस प्रतिबिंबित समाज की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -

[१] संयुक्त परिवार :

"भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास के प्रथम खंड में वर्माजीने संयुक्त परिवारव्यवस्था का चित्र चित्रित किया हैं। प्रथम खंड की कथा में हम देखते हैं कि, मुंशी शिवलाल उस मध्यवर्ग के प्रमुख हैं, जो संयुक्त कुटुंब के मध्यवर्गीय जीवन को अविभाज्य अंग के रूपमें स्वीकार करते हैं। स्वयं तो वे विधुर हैं परन्तु उनका संयुक्त परिवार हैं और उस परिवार में उनके छोटे भाई राधेलाल का शासन है। परिवार का सबसे बड़ा व्यक्ति ही स्वामी रहता हैं परंतु युग परिवर्तन के कारण परिवार में कमानेवाला व्यक्ति ही स्वामी रहता हैं। यही स्थिति मुंशी शिवलाल के परिवार में हैं।

...२..

मुंशी शिवलाल का पुत्र ज्वालाप्रसाद नायब तहसीलदार होते ही उसके हाथ में अपने घर का स्वामीत्व आता है। सास-राधेलाल की पत्नी का आधिपत्य चला जाता है और वह आधिपत्य उनकी बहू जमुना के हाथ में आता है।

इस प्रकार भगवतीबाबू ने संयुक्त परिवार व्यवस्था का चित्रण युगानुरूप बदलते हुए रूपों में किया है।

[२] टूटता हुआ संयुक्त परिवार :

"भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास के प्रथम खंड में वर्माजीने संयुक्त परिवार व्यवस्था का चित्र चित्रित किया है और उसके विघटन की कहानी द्वितीय खंड में कही है। उपन्यास का विभाजन बदलते हुए जीवन-मूल्य और कथानक के नये मोड़ों के आधार पर हुआ है। परिवार का सबसे बड़ा व्यक्ति अब उसका स्वामी नहीं रह गया, अपितु स्वामित्व उसके हाथ में आ गया, जिसके पैसे के आश्रय में परिवार पलने लगा। घर की मालकिन अब सास नहीं बहू हो गयी, क्योंकि उसका पति कमाता है और पूरे परिवार का भरण-पोषण करता है। मुंशी शिवलाल भी यह अनुभव करते हैं कि अधिकार और शक्ति अपना स्थान बदल रहे हैं, एक जगह से हटकर दूसरी जगह जा रहे हैं। छिनकी के उत्तर से उस टूटती हुई सम्मिलित परिवार-व्यवस्था का रूप हमारे सामने स्पष्ट हो जाता है - "घर की मालकिन ज्वाला की बहू आय ई जो सब राजपाट आय तौन ज्वाला बदौलत सब लोग भोग रहे आय...।" १

इस प्रकार वर्माजीने "भूले-बिसरे चित्र" के द्वितीय खंड में टूटते हुए संयुक्त परिवार की दशा का चित्रण किया है।

[३] वर्ण - व्यवस्था :

"भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास में वर्माजी ने विशेष रूप से वर्ण-व्यवस्था के जड़-संस्कारों तथा जाति-व्यवस्था का विस्तार से चित्रण किया है।

छिनकी, दलित-वर्ग की हीन-भावना से ग्रस्त नारी है। छिनकी, जो एक स्थान पर शिवलाल के जीवन का अविभाज्य अंग है और उसकी पर्यंक-शायिनी है, वहीं दूसरे स्थान पर खानपान की दृष्टि से उनके लिए अस्पृश्य है। यह भारत की तत्कालिन विघटित होती हुई वर्ण-व्यवस्था का द्योतक है, जो निम्न वर्ग की स्त्रियों को प्रेम और वासना की तुष्टि के लिए उपयुक्त साधन के रूप में अवश्य अपनाती है, परंतु सामाजिक प्रतिष्ठा देने के लिए तत्पर नहीं दीख पड़ती। धर्मभीरु होने के कारण निम्न वर्ण के व्यक्तियों के हाथ का भोजन करने से उच्च वर्ण के लोगों का धर्म नष्ट हो जाता है। इसीलिए वह मुंशी शिवलाल से कहती है, -

"राम राम। हम कच्ची रसोइयाँ माँ कैसे जाई ? कलपवास कर रहे हो तौन धरम-करम का तो खयाल राखौ। चौका माँ हमरे जाय से चौका छूत हुई जइहे न।"[2]

शिवलाल के विशेष आग्रह पर वह बड़ी विनम्रतापूर्वक कहती है, -

"तुम्हारे हाथ जोड़ित हन, ई पाप हमसे न कराओ चौका मा न घुसब। तुम्हार परलोक हमरे हाथ न बिगड़े।"[3]

अन्त में क्रोधभरी आज्ञा को शिरोधार्य कर विव्हल मन से चूल्हा फूंकती हुई अपने निर्दोष होने का साक्ष्य-सा प्रस्तुत करती है -

"हे गंगा मइया। तुम हमार साच्छी हो कि हम इन केर धरम नाहीं लीन। इन केर आक्कल बौराय गई है, तौन इन केर पाप क्षमा करो। रसोई बनाय के इन्हें खिलाई तो इन केर धरम कर जाय, और न बनाई तो ई भुखन कलपैं और हम पर मार पड़े ऊपर से।"[4]

छिनकी के इस कथन में लेखक ने एक ओर समाज के निम्न वर्ग की दयनीय स्थिति का वर्णन किया है, वहीं दूसरी ओर हिन्दू-वर्ण-व्यवस्था की आडम्बर-प्रियता पर करारा व्यंग्य करने से चूकता नहीं।

[४] अछूत समस्या :

"भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास के प्रथम खंड में देखते है कि, उस युग में उँच-नीच की भेद-भावना इतनी प्रबल थी कि चमार, ब्राम्हण के कुएँ से पानी तक नहीं पी सकता था। इस जड़ होती हुई समाज-व्यवस्था में भी हमें कुछ प्रगतिशील तत्व दिखाई पड़ते हैं, जिनका प्रतिनिधित्व हमीरपुर के मुंशी रामसहाय करते हैं। वे अपनी हवेली के कुएँ का आधा हिस्सा चमारों के उपयोग के लिए दे देते हैं, पर इसप्रकार के प्रगतिशील प्रयत्नों का मध्यवर्ग में सदैव विरोध होता आया है, इसीकारण मुंशी रामसहाय को भी इस विरोध का सामना करना पड़ता हैं। प्रश्न यह था कि, जिस कुएँ से चमार पानी भरते हों उस कुएँ से ब्राम्हणों के पानी लेने से क्या ब्राम्हणों का धर्म बच सकेगा ? ब्राम्हण उस कुएँ से पानी तभी ले सकते थे, जब चमारों को पानी भरने के लिए मना कर दिया जाय।

इसप्रकार वर्माजीने "भूले बिसरे चित्र" उपन्यास के प्रथम खंड में अछूत समस्याका चित्रण किया हैं।

[५] नारी समस्या :

नारी का स्थान समाज में बहुत ही महत्वपूर्ण होता हैं। किसी भी समाज की श्रेष्ठता तथा कनिष्ठता उस समाज में नारी की स्थिति पर निर्भर करती हैं। इस प्रकार नारी समाज की उन्नति-अवनति की द्योतिका हैं। भारतीय समाज में नारी अनेकानेक समस्याओं से ग्रस्त रही हैं। इनमें से नारी को समाज में निहित कुप्रथाओं को, अनेक समस्याओं को झेलना पड़ा है जैसे, पर्दा प्रथा, दहेज प्रथा, विधवा समस्या, तलाक समस्या, अवैद्य प्रेम की समस्या आदि का सामना करना पड़ता है, जिनका विवेचन इस प्रकार किया है -

[५.१] पर्दा प्रथा -

भारतीय समाज में मुस्लिम सभ्यता एवं संस्कृति के आगमन-काल से

इस प्रथा का प्रचार हुआ। इस प्रथा ने नारी-जीवन की प्रगति में भीषण बाधा पहुँचाई और उसका स्वस्थ सामाजिक विकास न हो पाया, वह घर की चार दीवारी में बंद रहने लगी। "भूले-बिसरे चित्र" की यमुना, रुक्मिणी ऐसी ही नारियाँ हैं, जो पारिवारिक बन्धन में बंधी होने के कारण इस विकृति से मुक्त न हो सकी हैं। परन्तु विद्या जो परिवार की अगली कड़ी है वह सर्वथा इस प्रथा का विरोध करती है और उसमें उसे सफलता भी प्राप्त होती है। गंगाप्रसाद के माध्यम से उपन्यासकार ने पर्दा-प्रथा का विरोध किया है, जो मध्यवर्गीय चेतना का परिचायक है।

इस प्रकार भगवतीचरण वर्मा ने "भूले-बिसरे चित्र" में पर्दा प्रथा का चित्रण किया है।

[५.२] अनमेल विवाह -

भारतीय समाज में अनमेल-विवाह एक भयंकर सामाजिक दोष है। "भूले-बिसरे चित्र" में उच्च-वर्ग के सरकारी अफसरों की दहेजप्रियता, बहू के प्रति नृशंसतापूर्ण व्यवहार की कहानी विद्या के माध्यम से चित्रित की गई है। इन अफसरों की दृष्टि में लड़की के पिता की आर्थिक और सामाजिक स्थिति का ही मूल्य होता है, लड़की का नहीं। बिन्देश्वरी बाबू, जो डिस्ट्रिक्ट एन्ड सेशन्स जज्ज हैं, उनके पुत्र सिध्देश्वरी प्रसाद के साथ बीस हजार दहेज देकर अपनी बहन विद्या का विवाह करता है, परन्तु बिन्देश्वरी और सिध्देश्वरी की अर्थ-लोलुप दृष्टि का परिणाम विद्या को भुगतना पड़ता है। विवाह के बाद विद्या जब अपने ससुराल पहुँची तो ससुराल-वालों की अर्थलोलुपता से घृणा करने लगी, जिसका समझौता उनमें जीवनभर न हो सका।

"मैं अपने ससुराल वालों से घृणा करने लगी हूँ। जिन लोगों ने मेरे घर को तबाह करके रख दिया, उनके प्रति मुझमें प्रेम कैसे हो सकता है। उस खानदान का हरेक आदमी मुझे पिशाच के रूप में दिखता है।" [५]

विदुया पढ़ी-लिखी सुशिक्षित नारी है, जो दाम्पत्य-जीवन में प्रेम के अभाव में समझौता नहीं कर पाती है। इस प्रकार सिद्धेश्वरीप्रसाद और विद्या में वैचारिक मेल नहीं हो पाता।

[५.३] दहेज प्रथा -

भगवतीचरण वर्मा ने मध्यवर्ग की विवाह तथा दहेज-प्रथा की समस्या को "भूले-बिसरे चित्र" में विदुया के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। विदुया का विवाह सिध्देश्वरी प्रसाद से होता है, जो एक पी.सी.एस. अफसर है। विवाह में दहेज देने के लिए ज्वालाप्रसाद तथा नवल किशोर को बीस हजार रूपया खर्च करना पड़ता है। विदुया नई पीढ़ी के नारी-समाज का प्रतिनिधित्व करती है, जिसमें सामाजिक कुरूपताओं से विद्रोह करने का साहस है। पति तथा ससुराल वालों के दुर्व्यवहार पर रूष्ट होकर वह पति से सम्बन्ध-विच्छेद कर लेती है तथा नौकरी कर आत्मनिर्भर जीवन व्यतीत करती है।

इस प्रकार वर्माजीने "भूले-बिसरे चित्र" में दहेज की कुप्रथा का चित्रण विदुया के माध्यम से किया है।

[५.४] अवैदृय प्रेम की समस्या - अवैध

वर्माजी के "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास में अवैदृय प्रेम की समस्या व्यापक धरातल को आत्मसात करती हुई एक ही परिवार की तीन पीढ़ियों का सटीक चित्र प्रस्तुत करती है। छिनकी कहारिन शिवलाल की शारीरिक तृप्ति का माध्यम ही नहीं है अपितु पारिवारिक मान्यता भी प्राप्त किये है। प्रेम का दूसरा रूप ज्वालाप्रसाद और जैदेई के माध्यम से प्रकट हुआ है। प्रेम का तीसरा रूप गंगाप्रसाद और सैतो के दुवारा अभिव्यक्त हुआ है। गंगाप्रसाद अधिक स्वच्छन्द और विलासी होने के कारण वह कभी "सैतो" तो कभी "मलका" और कभी अन्य स्त्री से शारीरिक तृप्ति करना चाहता है। प्रेम का चौथा रूप नवल और उषा दुवारा स्पष्ट हुआ है जो सर्वथा सात्विक है। प्रेम के क्षेत्र में शिवलाल और ज्वालाप्रसाद, गंगाप्रसाद और नवलकिशोर क्रमशः आशा से निराशा, आस्था से अनास्था और विश्वास से अविश्वास

की ओर बढ़ते गये हैं।

इस प्रकार भगवतीचरण वर्माजीने "भूले-बिसरे चित्र" में अवैद्य प्रेम की समस्या का सटीक चित्रण किया है।

[५.५] विधवा समस्या -

विधवा-प्रथा द्वारा नारी का जितना अमानुषिक शोषण हुआ है, सम्भवतः समाज के अन्य किसी विधान द्वारा न हुआ होगा। यह प्रथा जहाँ एक ओर अनेक सामाजिक दोषों का परिणाम है, वहीं दूसरी ओर कतिपय सामाजिक समस्याओं की जन्मदात्री है। "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास में जैदेई का वैधव्य एकमात्र ज्वालाप्रसाद की प्रेमवासना की पूर्ति के लिए ही चित्रित नहीं किया गया है, अपितु युगीन परिवेश में ठाकुर-बनिये के प्रबल संघर्ष का हत्या-आत्महत्या में परिणत होना। जैदेई पति की मृत्यु के पश्चात् अपनी जमींदारी की व्यवस्था करती है। अपने स्वर्गवासी पति के प्रति पूर्ण श्रद्धा रखती है और उसके जीवन का एकमात्र उद्देश यह है कि अपने मृतक पति की अभिलाषाओं को पूर्ण करें। पति के हत्यारे बरजोरसिंह को सजा दिलाने के लिए जैदेई नायब तहसीलदार ज्वालाप्रसाद की सहायता लेती है। बरजोरसिंह कानून के भय से आत्महत्या कर लेता है। लेकिन यही जैदेई अन्त में ज्वालाप्रसाद की सहायता के अतिरिक्त अपनी प्रेमवासना की कसक मिटाकर उसे सदा के लिए अपना बन लेती है। निरीह विधवा को आर्थिक सुरक्षा, सामाजिक सुरक्षा एवं प्रेम-सेक्स की भूख मिटाने के लिए सुदृढ़ पुरुष का आश्रय आवश्यक होता है, जिसे प्राप्त करने के लिए जैदेई ज्वालाप्रसाद को उपयुक्त समझती है।

जैदेई के इस मानसिक अन्तर्द्वन्द का यमुना अनुभव करती है और उसकी मार्मिक पीड़ा का विश्लेषण करती हुई कहती है, -

"औरत सदा सहारा ढूँढ़ती है। लम्बरदार के चले जाने पर लम्बरदारिन ने तुम्हारा सहारा चाहा। क्योंकि तुम सहारा देने को तैयार थे, तो उसे तुम्हारा सहारा मिल भी गया। लेकिन तुम कहीं भाग न खड़े हो, उसे सहारा

देना बन्द न कर दो, इसलिए लम्बरदारिन ने तुम्हारे सहारे का मोल चुकाया है, धन से, मन से और तन से।" [6]

इसप्रकार भगवतीचरण वर्माजीने "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास में विधवाओंकी समस्याओंका सही चित्रण किया है।

[६] आर्थिक संचेतना -

भगवतीचरण वर्मा ने अपने साहित्य में अधिकांश सामाजिक समस्याओं के मूल में अर्थ को ही उत्तरदायी ठहराया है। उनके "भूले-बिसरे चित्र" में आर्थिक अभाव सामाजिक समस्याओं का कारण है तथा अंग्रेजों और भारतीयों के आर्थिक संघर्ष के माध्यम से कृषि, उद्योग, मिल-मालिक और मजदूर-समस्याएँ चित्रित हुई है। इसमें एक ओर मध्यवर्ग के पात्रों के माध्यम से भारत की आर्थिक दुर्दशा का चित्र तथा दूसरी ओर मशीनों और उद्योग-धन्धों के बढ़ते प्रभाव से अंग्रेजों की विलासिता का चित्र प्रस्तुत किया गया है। किसानों पर गरीबी और कर्ज का बोझ बढ़ाने वाले मुख्य कारणों में अंग्रेजों द्वारा प्रचलित लगान पद्धति और जमींदारी प्रथा उल्लेखनीय है।

"भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास में प्रभुदयाल किसानों का शोषण करने वाला ही बनिया नहीं है, अपितु बरजोरसिंह सदृश जमींदारों की जमींदारी हड़पने वाला महाजन है, जिसका अगला चरण, अगली पीढ़ी में उद्योगपति लक्ष्मीचन्द्र के रूप में होता है। पूँजीवादी युग में पैसा ही शक्ति और अधिकार का मानदण्ड होने के कारण पैसों के ही बल पर बरजोर सिंह और प्रभुदयाल के अधिकार बदल गए।

भारत में महँगाई बढ़ने के साथ-साथ नौकरी और बेकारी की समस्या भी तेजी से बढ़नी लगी। मध्य तथा निम्नवर्ग ही इसका शिकार बना। "भूले बिसरे चित्र" में वर्माजी ने शिक्षित बेकारी के कतिपय चित्र चित्रित किये हैं। नवल कहता है,

"न जाने कितने युवक पढ़-लिखकर बेकार घूम रहे हैं। उनके अन्दर कटुता भर गई है। हजारों युवक वकील बन गए हैं। और उन्हें खाने तक को नहीं मिलता। हजारों नवयुवक बी.ए. और एम.ए. पास करके दफ्तरों के चक्कर लगा रहे हैं और उनके लिए काम नहीं है।" ७

इस प्रकार भगवतीचरण वर्मा ने अधिकांश सामाजिक समस्याओं का मूल कारण अर्थ स्वीकार किया है।

[७] असहयोग आंदोलन की असफलता :

स्वतंत्रता-आन्दोलन जिस समय अपनी चरम-सीमा पर पहुँचने जा रहा था कि, ठीक उसी समय उसे रोक देने से देश-भर में क्षोभ और निराशा छा गई। आन्दोलन स्थगित हो जाने के कारण देशभर क्रोध की लहर दौड़ गई। देशभर में कॉन्ग्रेस ने एक करोड़ सदस्य बनाने का निश्चय किया था, परंतु उसकी संख्या १९२४ तक दो लाख से अधिक न हो सकी।

जब बारदोली-घटना में अंग्रेज सरकार ने जो हिन्दू-मुस्लिम एकता का अपूर्व दृश्य देखा उससे वह घबड़ा गई और आन्दोलन स्थगित होते ही ब्रिटिश सरकार ने कूटनीति से काम लिया। सारे देश में साम्प्रदायिक अग्नि फैलाकर एकता को नष्ट कर दिया। वर्माजी के "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास में गंगाप्रसाद इसी ओर संकेत करता हुआ कहता है -

"यह तुम्हारा हिन्दु-मुस्लिम एकता का झूठा नारा है। यह मध्यवर्ग का नारा है। मेरा ऐसा खयाल है कि, इस नारे का खोखलापन जल्दी ही हमारे सामने जाहिर हो जाएगा। इस नारे के ऊपर उठकर जब तुम मनुष्यता का नारा उठा सकोगे, तभी तुम्हें सफलता मिलेगी। लेकिन इस सब में अभी तुम्हें सैकड़ों वर्ष लग जायेंगे।" ८

गंगाप्रसाद का यह कथन आन्दोलन के मध्य आने वाले भयानक संकट की यथार्थ स्थिति को प्रस्तुत कर देता है। फलतः हिन्दू महासभा और मुस्लिम लीग दो विरोधी संस्थाओं ने जन्म लिया और दोनों

साम्प्रदायिक प्रचारों में अपनी शक्ति का अपव्यय करने लगी। असहयोग आन्दोलन में मध्यवर्ग ने विशेषकर स्कूलों और कॉलिजों के विद्यार्थियों और अध्यापकों ने भाग लिया था। आन्दोलन की असफलता ने उन्हें आतंकवाद की ओर उन्मुख कर दिया।

इसप्रकार भगवतीचरण वर्माजीने "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास में असहयोग आंदोलन की असफलता के अनेक कारण बताए हैं और तत्कालीन समाज की परस्थित मानसिकता का चित्रण किया है।

[८] हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष :

हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष बीसवीं शताब्दी की भारतीय राजनीति का एक महत्वपूर्ण अंग है। इस संघर्ष ने ही राष्ट्रीय आन्दोलन के विकास में सर्वाधिक बाधा पहुँचाई। भारतीय इतिहास में मुस्लिम-जाति ही एक ऐसी भारतमें आयी, जिसके आचार-विचार हिन्दुओं के आचार-विचार से सर्वथा भिन्न थे। जनतांत्रिक व्यवस्था में बहुसंख्यांक जाति की ही प्रधानता रहने के कारण मुसलमानों ने जाति के आधार पर अपनी सीटों की माँग का प्रस्ताव रखा। हिन्दु सदैव इस माँग का विरोध करते रहे। इस समस्या को भगवतीबाबू ने "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास में व्यापक परिवेश में उठाया है।

भारतीय मुसलमानों ने हिन्दु धर्म की विकृतियों को तो पूर्णत: अपनाया परन्तु हिन्दू धर्म की उदारता को आत्मसात न कर सके। वह अपनी मजहबी कट्टरता किसी भी रूप में छोड़ न सके। हिन्दुस्तान का मुसलमान हिन्दुस्तान में रहते हुए मक्के-मदीने के ख्वाब न भूल सका। वह मुसलमान जिसने हिन्दुओं के कंधे से कंधे मिलाकर सन् १८५७ की महान क्रांती व्दारा अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिये थे, वही अपनी धार्मिक संकीर्णता से ग्रस्त होकर अंग्रेजों की भेद-नीति का शिकार बनकर हिन्दुओं से वैमनस्य मानने लगा। फलत: सदा के लिए हिन्दुओं से दूर होता गया।

जैसे-जैसे भारतीय राजनीति ने करवट बदली और अंग्रेजों ने उनके

कान फूँकने शुरू किये, सिर्फ वह हिन्दुओं से दूर ही नहीं होते गये, अपितु बहुसंख्यांक मुस्लिम स्वतंत्रता-संग्राम के विरोधी हो गए। इस रहस्य का उद्घाटन वर्माजीने "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास के एक पात्र डिप्टी अब्दुल हक व्दारा करते हैं।

"एक हजार वर्ष तक हमने हिन्दुओं पर हुकूमत की है, अब स्वराज्य मिलने के माने हैं कि हिन्दू हम पर हुकूमत करेंगे, हमें सताएँगे। हम, किसी हालत में इस स्वराज्य पर राजी नहीं होंगे।" [१]

इसीलिए महात्मा गांधीका सामाजिक भेदभाव और ऊँच-नीच मिटाने का हर प्रयत्न विफल रहा।

अत: कहा जा सकता है कि, भगवतीबाबू ने "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास में स्वाधीनता पूर्व हिन्दु-मुस्लिम संघर्ष का सही चित्रण प्रतिबिंबित किया है।

[९] सामंत और जमींदार -

भगवतीचरण वर्माजीने ताल्लुकेदारों और जमींदारों का जो स्वरूप अपने उपन्यास में वर्णित किया है वह नितान्त अकर्मण्य और शोषक-वर्ग का समुदाय है। जो अंग्रेजों का कृपापात्र बनकर गाँवों में अपना शोषण-चक्र फैला रखा था। इस वर्ग की आय का सर्वाधिक भाग विदेश चला जाता था जिसके कारण देश बढ़ते हुए दिन-प्रति-दिन के गरीबी के भार से दबा जा रहा था। वर्माजी ने यह स्पष्ट कर दिया है कि, अंग्रेजों से अधिक अत्याचार भारतीय सामन्त और जमींदार करते हैं।

सामन्तों और राजाओं को क्रूरतापूर्ण शासन करने का प्रशिक्षण विदेशी शिक्षा के माध्यम से दिया जाता था, ताकि ये लोग जनता में अपनी लोकप्रियता खोकर सामान्य जनता उनसे घृणा करें जिससे अंग्रेजी सरकार के प्रति ही आस्था सामान्य जनता में बढ़े। जनता तो इस दोहरे शोषण में पिस रही थी - एक तो सरकार द्वारा दूसरे सामन्तों से।

इस प्रकार वर्माजीने "भूले-बिसरे चित्र" में सामंतशाही तथा जमींदारी वर्ग की कुप्रथाओंका सही चित्रण प्रतिबिंबित किया।

निष्कर्ष :

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि, "भूले-बिसरे चित्र" एक बृहत सामाजिक उपन्यास है, जिसमें स्वाधीनता पूर्व विविधमुखी भारतीय सामाजिक जीवन प्रतिबिंबित हो चुका है। वर्माजी ने इस उपन्यास में उच्चवर्ग से लेकर निम्न वर्ग तक के लोगों का चित्रण अनेक घटनाओं के माध्यम से किया है।

"भूले-बिसरे चित्र" में कथानक तथा घटनाओं में सुसंबंधता नहीं है, अगर इस उपन्यास की कथावस्तु तथा घटनाओं में एकरूपता रहती तो यह उपन्यास विश्व में अधिक सफल बन जाता। लेकिन कुछ कमियाँ तथा त्रुटीयाँ के रहते हुए भी भगवतीचरण वर्माजीने अपनी उद्देशपूर्ती में सफलता प्राप्त कर ली है।

भगवतीचरण वर्माजी का "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास लिखने से पहले यही उद्देश था कि, स्वाधीनतापूर्व कालखंड के विविधमुखी भारतीय सामाजिक जीवन का चित्रण किया जाय। "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास में संयुक्त परिवार की व्यवस्था, टूटता हुआ संयुक्त परिवार, वर्ण-व्यवस्था, अछूत समस्या, नारीयोंकी अनेक समस्याएँ, आर्थिक समस्याएँ, असहयोग आंदोलन की असफलता, हिन्दु-मुस्लिम संघर्ष तथा सामन्त और जमिंदारी व्यवस्था आदि प्रकार का समाज प्रतिबिंबित हो चुका है।

...

-:: संदर्भ - ग्रंथ सूची ::-

१] भगवतीचरण वर्मा - "भूले-बिसरे चित्र" - पृ. संख्या - ११२

२] भगवतीचरण वर्मा - "भूले-बिसरे चित्र" - पृ. संख्या - १०१

३] भगवतीचरण वर्मा - "भूले-बिसरे चित्र" - पृ. संख्या - १०१

४] भगवतीचरण वर्मा - "भूले-बिसरे चित्र" - पृ. संख्या - १०२

५] भगवतीचरण वर्मा - "भूले-बिसरे चित्र" - पृ. संख्या - ४९१

६] भगवतीचरण वर्मा - "भूले-बिसरे चित्र" - पृ. संख्या - ७४

७] भगवतीचरण वर्मा - "भूले-बिसरे चित्र" - पृ. संख्या - ५५०

८] भगवतीचरण वर्मा - "भूले-बिसरे चित्र" - पृ. संख्या - ४०५

९] भगवतीचरण वर्मा - "भूले-बिसरे चित्र" - पृ. संख्या - ३४२